IJAER/November-December 2015/Volume-4/Issue-3/Article No-4/ 19-22 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

कश्मोर म आतकवाद एव विभिन्न महाशक्तिया को भ्मिका का संक्षिप्त म्ल्यांकन

Sukh Dev
Govt. High School
Kagdana, Haryana

सार–

विश्व भर म आतकवाद एक समस्या क रूप म उभर गया ह। पिछल दशक म असख्य लागा न आतकवादो आक्रमण म अपनो जान गवाइ ह। आतकवाद का मख्य उद्दश्य सवधानिक राजतिक व्यवस्था का ताडना आर अधोनस्थ करना ह। भारत म आतकवादो गतिविधिया उत्तर पव, उत्तर एवम दक्षिण क राज्या म सघनता स अनभव को जा रहो ह। आर उसक पोछ जा तक निहित ह वह विकास क फला का असतलित वितरण समझा जा रहा ह आतकवाद का भारत म क्या उदय हआ ह? वह क्या विस्तार पा रहा ह? उसक क्या परिणाम हाग इत्यादि क सन्दभ म विगत दशक म विद्वाना आर मनोषिया द्वारा अनका बाद्विक एवम अनभवात्मक लख लिपिबद्ध किय गय ह इस परिपक्ष्य म पस्तावित शाध पपर म यह जानन का पयास ह कि अन्तराष्टोय क्षत्र स महाशक्तिया एव उपमहाद्वोपोय क्षत्र को शक्तिया को आतकवाद का पात्साहित करन म क्या भमिका ह ? आर भारतोय कटनोति तथा पाकिस्तानो कटनोति किन कारणा स तनाव म शिथिलता नहो आन दना चाहतो ह? इस दष्टि स पस्तावित शाध पपर न कवल आतकवाद क सद्वान्तिक पहल का अनशोलन करगा अपित इस सदभ म उपमहाद्वोपोय एव अन्तराष्टोय शक्ति को भमिका तथा भारतोय शासका क दष्टिकाण को व्याख्या करन का पयास करगा।

पस्तावना–

विश्व व्यवस्था क समक्ष अगर कछ एसो चनातिया को चचा को जाय जा इस व्यवस्था का सकट म डाल सकतो ह ता उन चनातिया म स शोषथ चनातो आतकवाद को कहो जा सकतो ह। लटिन अमरिका, उत्तरो अमरिका स लकर मध्य एशिया, यराप, दक्षिण एशिया विश्व का एसा काइ उपमहाद्वोप नहो जहा आतकवादो समह क्रियाशोल न हा जहा जानमाल, धन को अपार क्षति न हइ हा। अतः सद्धान्तिक रूप स यह विचार पासगिक पतोत हाता ह कि आतकवाद को वित्पष्टि, विकास आर विस्तार पर विचार किया जाय। द्वितोय विश्वयद्ध क उपरान्त राष्ट राज्य को परिकल्पना, धामिक जातोय वचस्व का दष्टिकाण एव आथिक आर विकासगामो लाभा क असन्तलित वितरण स उत्पन्न असताष न विभिन्न समहा का एकोकत आर सगठित करन का पयास किया ह। यह पयास हो सत्ता क विरूद्ध सत्ता पाप्त करन क पयास म शस्त्र अस्त्रा क पयाग स सामान्य जन का हानि पहचान तथा स्वय राजनोतिक सत्ता पाप्त करन को चष्टा रहो ह। भारत वष म स्वतन्त्रता क उपरान्त काश्मोर पवात्तर पान्त, पजाब पमखतः आतकवाद स पभावित रह ह। अतः यह पासगिक ह कि यह जाना जाय कि आतकवाद क क्या उददश्य, कितन पकार, इसक विकास क क्या कारण ह आर इस परिपक्ष्य म कश्मोर म फल रह आतकवाद का जानन का पयास किया जाय। वचारिक रूप स आतकवाद, नित्स, सात राजस डिबर जस उत्तर साम्यवादो विचारका को दन ह। व मानत ह। हिसा समाज म परिवतन लान का पभावो माध्यम ह। अराजकतावादो भो हिसा क सकारात्मक स्वरूप का स्वोकार करत ह आर हिटलर को तरह व मानत ह कि विनाश स नवसरचना पगट हातो ह।

इस पकार स वाकनिन भो विनाश को विचारधारा क पाषक ह। इन विचार धाराआ न हो आतकवाद का पात्साहित किया ह कहना न हागा कि माक्सवादो समाज म परिवतन क लिय कठार नियमा को वकालात करत ह। नव वामपथिया न खलकर हिसा क पयाग को वकालत को ह। फन्डस फनन, नव वामपथ को विचारधारा म हिसा क पवतक ह आर सामाजिक तथा नतिक पन सरचना क लिय इस उपयागो मानत ह। उनक अनसार हिसा क पयाग स वधानिक राजनोतिक सत्ता अनायास हाथा म आ सकतो ह। जसा पवाक्त ह। अपक्षाआ को पति म जब सवधानिक माध्यम सहायक नहो हा पात तब असन्ताष उत्पन्न हाता ह तब व्यापक स्तर पर उत्पन्न असताष सामाजिक स्तर पर परिवतन लान क हिसा क उपयाग को अनमति दता पतोत हाता ह। इस दष्टि स हिसा दा पकार को हातो ह। एक व्यक्तिगत हिसा क पोछ जातोय, सामाजिक सस्थागत आर समहगत घणा को भावना हातो ह जबकि ससाधन गत हिसा का घणा स नहो अपित उददश्य को पाप्ति स सम्बन्ध हाता ह। वाल्टर लकर आतकवाद को परिभाषा म हिसा तथा धमको क उस पयाग क रूप म मानत ह। जा कछ लक्ष्या को पाप्ति क लिय को जातो ह। उसका काइ दाशनिक पहल नहो हाता ह। उसका एक मात्र उददश्य जनसाधारण का भयभोत करना ह ताकि उददश्य को पाप्ति को जा सक।

आतकवाद को वधानिक परिभाषा भारतोय परिपक्ष्य म आतकवाद निराध अधिनियम क अनच्छद क उप अनच्छद क अन्दर परिभाषित किया ह, क अनसार जा काइ भो वधानिक रूप स स्थापित सरकार का भयाक्रान्ता करन को दष्टि स अथवा जन साधारण म आतक फलान को दष्टि स अथवा समाज क किसो वग का अलग करन को दष्टि स अथवा समाज क वग, वग विशष का अलग करन को दष्टि स अथवा समाज क विभिन्न वगा को एकता का भग करन को दष्टि स काय करता ह अथवा व घायल हात ह। अथवा व्यापक विध्वस हाता ह। या लागा का पभावित करत ह। ता एस काय आतकवादो काय कह जायग आतकवाद को भारतोय सन्दभ म य व्यापक परिभाषा ह। अमरिको साहित्य म आतकवाद का परिभाषित करत हय यह स्पष्ट किया गया ह कि आतकवाद राजनोतिक आचरण का पभावित करन का एक साकतिक किन्त सनिश्चित माध्यम ह। जिसम हिसा आर धमको का पयाग खलकर हाता ह। अन्तराष्टोय विधि भो आतकवाद का परिभाषित करतो ह, एव उल्लख करतो ह कि आतकवाद शस्त्र हिसा का काइ भो वह काय ह जा राजनोतिक, सामाजिक, वचारिक, धामिक आर दाशनिक कारणा स किया जाता ह आर मनष्य क अधिकारा का जघन्य माध्यमा स नियन्त्रित करता ह। जिसम अधिकाशतः निदाषा का लक्ष्य बनाया जाता ह। उपराक्त सभो परिभाषाआ का एक स्थान पर सज्ञिप्त उल्लख किया जाय ता कहा जा सकता ह कि आतकवाद एक पकार को हिसा ह जा राजनोतिक लक्ष्या को पाप्ति क लिय तब पयाग को जातो ह। जब सघष निराकरण क सभो उपाय पयक्त हा चक हा।

आतकवाद क विशिष्ट तत्व क्रमशः सगठित आर व्यवस्थित हिसा ह जिसका लक्ष्य राजनोतिक सत्ता पाप्त करना ह। राजनोतिक सत्ता पाप्त कर अन्याय आर स्वतन्त्रता को अस्वोकति क खिलाफ सघष ह। यह राजनोतिक सघष क लिय एक साधन ह। जिसक माध्यम स राजनोतिक लक्ष्या को पाप्ति को जा सकतो ह। एवम इस सघष म आन्तरकि आर बाहय समथन को सरचनाय हातो ह। जिसम पयाप्त शक्ति, ससाधन आर सादबाजो को क्षमताय हातो ह।

यहा यह उल्लख समचोन हागा कि आतकवाद क सिद्धान्त क दायर म समचित रूप स नहो पाया जा सकता यदि राजनोतिक हिसा क सिद्धान्ता का काल माक्स, माआसतग, लनिन, टाटस्को, फदल कास्त्रा, चिग्वरा, रचिश टवर, फन्डस फनन, सात्र (ज्या, पाल) सारल, आर हबट मरक्यज आदि न पतिपादित करन को चष्टा को इन सभो न राजनोतिक हिसा का सम्माननोय स्थान दिया आर उस समाज का स्वच्छ करन का साधन बताया जा उत्पोडन आर शाषण क विरूद्ध स्वतन्त्रता पदान करन म सक्षम ह। फलिस गास न भो क्रान्ति जनित हिसा क विषय सिद्धान्त दिया ह आर उसक आधार बताय जिसम दयनात्मक शासन व्यवस्था का हाना, आतकवादो सिद्धान्ता का हाना आर उन सिद्धान्ता क पसार क लिय सक्रिय व्यक्तिया का हाना आवश्यक बताया गया ह।

आतकवाद क लिय काइ एक कारण नहो अपित अनक कारण उत्तरदायो ह। आज क आद्यागिक समाज म व्याप्त अन्याय, सामाजिक, आथिक, राजनोतिक तनाव, असमानता, विषमता आर अन्तनिहित अन्याय, वचारिक आर धामिक आधार पर समाज का विभाजन, उपनिवशवादो परिस्थितिया, व व विचारधाराय जा हिसा का पतिराधित करतो ह। अनत्तरदायो आर असवदन शोष सरकार, अपभावो सरक्षा बल, समाचार पत्रा क माध्यम स विश्वव्यापो समदोाय तक पहच पान को सम्भावनाय विभिन्न स्त्राता स पशिक्षण समथन आर पात्साहन मिलन को सम्भावना आदि क कारण ह जा आतकवाद का सबल बनात ह। दसर शब्दा म आतकवाद क उपराक्त कारणा म स अनका कारण जब एक साथ सचालित हा जात ह ता आतकवादो गतिविधिया पारम्भ हा जातो ह। जब यवाजन का समाज म समचित स्थान पाप्त नहो हाता ह ता तब आतकवाद सामाजिक हा जाता ह। जब रगभद क आधार पर समाज म असमानता हातो ह तब इस रगभद क साथ जाड दिया जाता ह। जब राजनोतिक दष्टि स सत्ता म भागदारो नहो मिलतो तब राजनोतिक हा जाता ह। सास्कतिक पहिचान का बनाय रखन म कछ तत्व सक्रिय हात ह। तब यह सास्कतिक हा जाता ह।

इन समोकरणा स आतकवाद का वतमान विश्व क समक्ष एक चनातो क रूप म पस्तत किया ह। कारण यहा जा भो हा समाज म अलगाव को स्थिति हिसा का जन्म दतो ह। आर हिसा आतकवाद का। अलगाव वाद का एक कारण आधनिकोकरण का हाना भो ह। यहा यह स्मरणोय ह कि आधनिकोकरण पाश्चातोकरण विवक समन्ता, अधिकार वाद, विव्यास्थिति परिवतन, आथिक विकास, सामाजिक सामहिकरण, सस्थाजन्य राजनोति आर पाश्चात लाकतान्त्रिक मल्य क कारण उत्पन्न हातो ह। अथात बढतो हइ जटिलताय सामाजिक व्यवस्था का एक दसर पर निधारित हाना आर यातायात आर सचार क माध्यमा म विस्तार तथा जन साधारण को उभरतो इच्छाए आर मानवता का पक्ष य सब भो आतकवाद क जन्म क लिय उत्तरदायो ह।

आतकवाद का एक अन्य मनावज्ञानिक कारण ह। हतआत्मा हान को अवधारणा जसिस रविरा न इस अवधारणा का उल्लख करत हए लिखा ह कि एक हतआत्मा हानि उठान क लिय सदव तयार रहता ह। आर मत्य

का वरण करता ह। वह मानता ह कि काल मत्य स कहो ऊपर ह। आर इश्वर का विजोत करतो ह आर जब पम भाग्य मत्य आर पाप जस विचार एक साथ एकत्रित हात ह ता हतआत्मा को अवधारणा सजग हातो ह।

सवपथम ता आतकवादो वित्तोय दष्टि स सदढ हान क लिय अपहरण क उपरान्त फिरातो क लिय सक्रिय हात ह। द्वितोय समाज म पचार पाप्त करन क लिय कछ भो चमत्कारिक काय करना चाहत ह। इसक लिय हत्या तथा ताड–फाड करन स भो नहो चकत। ततोयतः व समाज म व्यापक स्तर पर व अव्यवस्था इसलिय फलाना चाहत ह। ताकि जनसाधारण का मनाबल टट जाय उनका चाथा उददश्य व एसो क्रियाय करत ह जिसस तत्कालोन सरकार गिर जाय पाचवो दष्टि उनको समाज म व्यापक स्तर पर भय उत्पन्न करन को हातो ह आर अन्तः व आज्ञाकारिता एव सहयाग को भावना का थापत ह।

कश्मोर क आतकवाद स यह स्पष्ट हा चका ह कि आतकवादो भय उत्पन्न करन क लिय समच परिवार का भार दत ह आर व किसो क भो दाष का इस रूप म व्याख्याइत करत ह कि उसन आतकवादिया कि बात मानो या नहो इसलिय कश्मोर क आतकवाद म व लाग निशान पर रह ह जा विराधो पाटिया तथा नशनल कान्फस व कागस स सम्बन्धित ह। चकि राजनोतिक रूप स नशनल कान्फस व कागस पाटो व्यापक स्तर पर जन समथन रखतो ह। इसलिय आतकवादिया का लक्ष्य उनक व्यापक जन समथन का ताडना ह। जिसम पाकिस्तान भो उनका सहायक हाता ह। जसा उनका मानना ह। अधिकाश आतकवादिया का यह विश्वास ह कि समाज व्याप्त असन्तलन का दर करन क लिय हिसा किय जान को आवश्यकता ह। इसलिय हिसा उचित ह। उनका यह भो मानना ह कि व हिसा पारम्भ नहो करत अपित समाज म व्याप्त हिसा का पति उत्तरित करत ह। इस दष्टि स आतकवादो समह का वचारिक, व्यावहारिक एव मनावज्ञानिक समहा म बाटा जा सकता ह।

उपक्रान्तिकारो आतकवाद राजनोतिक दष्टि स पयक्त हाता ह जिसम शासन व्यवस्था का अपनो नोतिया एव कायक्रम क हित म काय करन क लिय विवश किया जाता ह इसक अन्तगत हिसा का पतोत्कात्मक रूप म पयाग किया जाता ह। सरकार द्वारा किय गय विभिन्न काया का बदल को भावना स पयाग किया जाता ह। दमनकारो आतकवाद साकतिक आतकवाद ह जा समाज क कछ समहा का दमित तथा पतिराधित करन क लिय पयक्त किया जाता ह। इसम दमन करन वालो शक्ति राज्य भो हा सकतो ह आर समह भो जा समाज समह विशष काय विशष क लिय बाहय करतो ह। इस राजकोय आतकवाद क रूप म भो जाना जा सकता ह। राजकोय आतकवाद उन लागा क विरूद्ध पयाग किया जाता ह जा शासन व्यवस्था क आदश नहो मानत ह। सम्पति आतकवादो नतत्व चमत्कारिक हाता ह। तथा वह समाज म जा भमिका निवाहित करता ह उसस परिवतन लान को साचता ह आर इस पकार हिसा का समाज म उच्च स्थान पदान करता ह। आतकवादिया का लाकतान्त्रिक सिद्धान्त जस कानन का राज्य आदि पावधाना का विराध करत ह।

निष्कष

कश्मोर म आतकवाद क परिपाषण म पाकिस्तान क कछ हित निहित ह जिसम दक्षिण एशियाइ क्षत्रोय राजनोति म भारत को तलना म शक्ति सन्तलन बनाय रखना पाकिस्तान को गह राजनोति म विकास को मन्द गति क विरूद्ध जनमत का धामिक कटटरता आर भारत विराध क नाम पर एकत्रोभत किय रखना, सन 1971 म भारत क हाथा पराजय का कश्मोर का भारत स अलग करक बदला लना एव इस्लामिक विश्व म अपन वचस्व को स्थापना करना ह। निश्चिय हो आतकवाद भारत को राष्टोय एकता, अखण्डता क लिय एक सकट को स्थिति पदा कर रहा ह। उपराक्त स यह स्पष्ट ह कि आतकवाद पयावरणोय तनावा स उत्पन्न हाता ह। अतः इन दबावा का पव भाषित कर लिया जाय ता भो लाकतान्त्रिक निदान निकाल जा सकत ह। कश्मोर क आतकवाद का उपराक्त सद्धान्तिक परिपक्ष्य म दखा जा सकता ह। इस दष्टि स यह लगाव ह कि कश्मोर को सामाजिक, आथिक स्थिति व उत्पन्न आतकवाद क कारणा का पहल विश्लषण किया जाय।

संदभ गन्थ सचो

1. एम0 पो0 श्रोवास्तव, अन्डर स्टडिग द फिनामिना आफ टरारिज्म ब्यरा आफ रिसच एण्ड डवलपमन्ट, मिनिस्टो आफ हाम एफयस गारमन्ट आफ इण्डिया, न्य दिल्लो जलाइ–सितम्बर, 2005
2. खान अब्दर राव – डामस्टिक फटस एण्ड रोजनल स्टबिलिटो इन साउथ एशिया, जलाइ, 1981।
3. जक्सन राबड – साउथ एशियन क्राइसिस – इण्डिया पाकिस्तान, बगलादश, लन्दन, चन्टा एण्ड विल्डस, 2012
4. अब्बास वियान एम0 जकिन्स – इन्टरनशनल टररिज्म, ए न्य, माड आफ कनफिल्यक्ट इन डविड काल्टन एण्ड कारलसि हट इ0टो0सो0 इन्टरनशनल टराजिरज्म, वल्ड सासाइटल, लन्दन, 1985।
5. क्रटन, जान, डब्ल – टररिज्म एण्ड दा साइकालाजो आफ द सल्फ इन लारन्स जलिक, फ्रोडमन एण्ड यानाह अलक्सन्डर, पास्पक्टिव आन टररिज्म, दहलो, 1985।

6. कमार एस0 क0 – पाकिस्तान–टररिज्म इन पजाब एण्ड काश्मोर, अमर पकाशन दिल्लो, 2011।
7. गजराल आइ0क0 – पाकिस्तान इन साउथ एशिया, वल्ड फाकजस, फाथ, एनअल नम्बर, दिसम्बर, 1983।
8. रायजादा फारूक मोर – एट आल कानस्पाइररो इन काश्मोर, श्रोनगर, साशल एव पालिटिकल स्टडो गप, 2012
9. लारन्स जाकिन्स फ्रोडमन – टररिज्म, पाब्लम्स आफ दा पालिस टरिकस, इन लारन्स जकिन्स फ्रोडमन एण्ड अलक्सन्डर परसपक्टिव इन टटरिज्म, दहलो, 1985।